''माध्यमिक विद्यालयों में संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता, सामाजिक समायोजन एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन''

A STUDY OF TEACHING APTITUDE, SOCIAL ADJUSTMENT AND JOB SATISFACTION OF SECONDARY SCHOOL SANSKRIT TEACHERS

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को पीएच.डी. शिक्षा संकाय

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध ग्रंथ का प्रारूप

शोध कर्ताः–

मनोज कुमार भारद्वाज

शोध निर्देशकः–

डॉ. नगेन्द्र सिंह

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

महर्षि दयान्नद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

2016

APPENDIX-IV
Format for outline of Proposed Research Work
(To be supplied in four copies)

1.	Name of scholar (In English)	:	Manoj Kumar Bhardwaj
	(In Hindi)	:	मनोज कुमार भारद्वाज

2. Title of Research Work: माध्यमिक विद्यालयों में संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता, सामाजिक समायोजन एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन"

(In English) **A STUDY OF TEACHING APTITUDE, SOCIAL ADJUSTMENT AND JOB SATISFACTION OF SECONDARY SCHOOL SANSKRIT TEACHERS**

3.	Location	:	**Department of Education** **RIE, Ajmer**

4. Importance of proposed investigation, objectives	:	**Annexure-1**
5. Review of work already done on the Subject of proposed research study.	:	**Annexure-2**
6. Research gaps identified in the proposed field of investigation.	:	**Annexure-3**
7. Major hypothesis, if any	:	**Annexure-4**
8. Material and methods/research methodology.	:	**Annexure- 5**
9. Bibliography	:	**Annexure - 6**

:

CERTIFICATE BY SUPERVISOR

Certified that:-

1. I am willing to guide the research work of **Mr. Manoj Kumar Bharadwaj** on the above subject if she registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge the subject selected has not been studied so far in any university.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline and bibliography, etc. submitted by the candidate.
5. Necessary facilities are available in the department for the above research work (Certificate from Principal/Head University Department with regards to facilities available is enclosed).
6. I have .... research candidate registered under my supervision and the serial no. of this candidate whose application being forwarded for registration is ....
7. The candidate is not a close relation (the term close relation is defined in examination ordinance of the university).

Signature of the Supervisor with date

डॉ० नगेन्द्र सिंह
Dr. Nagendra Singh
Head Deptt. of Education
Regional Institute of Education
अजमेर (राज०) Ajmer (Raj.)

Certified that the available facilities will be extended to Mr. **Manoj Kumar Bharadwaj** for research work if she registered for Ph.D.

Signature of Principal/ Director of the Institute with date

Annexure-1

Importance of Proposed Investigation, Objectives

आचार्य पूर्वरूपम् अन्तेवासी उत्तररूपम् विद्या सन्धि।

– तैत्रिय उपनिषद

प्राचीन भारत में गुरू एक आध्यात्मिक नेता कहा जाता है, समाज में गुरू का एक आदर्श स्थान था। मनु स्मृति में गुरू शब्दः का वर्णन् किया है।

व्युत्पति अर्थ में गुः – अन्धकार

रूः– प्रकाश

"गुरू वह है जो अन्धकार से प्रकाश की और ले जाये।"

हमारी शिक्षा पद्धति पर $\mathbf{W_3}$ आधारित

Work, Worship, Wisdom

पाश्चात्य शिक्षा पद्धति – $\mathbf{W_3}$ - Wealth, Wine, Wife पर आधारित है।

हमारे यहां पर गुरू को मानस पिता के समान माना है। शिक्षक जो कल्पना, ज्ञान, मानव प्रेम और ज्ञान के एक व्यक्ति में एक व्यक्तिगत रूप से बदलने में मदद करता है।

एक शिक्षक हमेशा छात्रों के साथ अपने व्यवहार में निष्पक्ष होना चाहिए। एक शिक्षक सभी छात्रों के साथ समान रूप से व्यवहार करता है। छात्रों के साथ निष्पक्ष व्यवहार एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा, विशेष रूप से सह–शिक्षा के मामले में है। यह इसलिए है क्योंकि कई शिक्षक लड़कियों की दशा में एक उदार रवैया दिखाते है।

शिक्षक कि शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा है और सार्वजनिक शैक्षिक कार्यक्रम जो प्रदान किया जा रहा है उसके बारे में सूचित रखने के लिए प्रयास करना चाहिए। वे समुदाय में वृद्धि शिक्षा में सुधार और समुदाय के नैतिक और बौद्धिक जीवन को मजबूत बनाने के लिए काम करना चाहिए। सामाजिक गतिविधियों में हिस्सा लेना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 "आवश्यक मूल्यों और वृद्धि समाज में बढ़ रही सनक के कटाव पर बढती चिन्ता के क्रम में शिक्षा सामाजिक नैतिक और राष्ट्रीय मूल्यों की खेती के लिए एक सशक्त उपकरण बनाने के लिए पाठ्यक्रम में पुनः समायोजन के लिए आवश्यकता को ध्यान केन्द्रित करने को कहा गया। इस संदर्भ में शिक्षकों की भूमिका में महत्वपूर्ण बनी हुई है।

शिक्षा

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते"

शिक्षयति या सा शिक्षा (ईशा.उ. 22)

"शिक्षा" संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातोः निष्पन्नः जिसका अर्थ विद्या प्राप्त करना। छात्र की आन्तरिक शक्ति को बाहर प्रकाशित करना।

"नहि ज्ञानेन् सदृशं पवित्रमिह विद्यते"

सा विद्या या विमुक्तयेः (श्रीमद्भगवद्गीता)

भृतहरी ने नीतिशतकम् में कहा है –

जो व्यक्ति साहित्य संगीत कला से विहीन है वह साक्षात पशु के समान है।

अरस्तु – स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निर्माण ही शिक्षा है।"

महात्मा गांधी – शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक एवं मनुष्य के शरीर मस्तिष्क एवं आत्मा के सर्वोतम अंश की अभिव्यक्ति है।

जॉन ड्यूवी – शिक्षा एक जीवनयापन की प्रक्रिया है।

संक्षेप में व्यक्तित्व के सर्वांगीण तथा सन्तुलित विकास की प्रक्रिया ही शिक्षा है।

शिक्षण – शिक्षण का अर्थ ज्ञान प्रदान करना कौशल का विकास करना, अनुदेशन देना पाठ पढाना, उन्हें उत्साहित करना।

सार रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षण वह प्रक्रिया है जो सीखने को प्रभावित करती है। उसका स्वरूप विभिन्न परिस्थितियों में अलग–अलग हो सकता है परन्तु उन सभी का उद्देश्य छात्रों को सिखाना होता है।

स्मिथ – शिक्षण एक उद्देश्य निर्देशित क्रिया है।

जेम्स एम. थारन–समस्त शिक्षण का अर्थ है– सीखने में वृद्धि करना।

अतः शिक्षण का अर्थ सीखना–सिखाना ज्ञान् में वृद्धि करना कोशल में सुधार लाना और व्यवहार में परिवर्तन की क्षमताएं प्रदान करने से है।

शिक्षक–शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक को स्वतन्त्र चर की संज्ञा दी गयी है। शिक्षक ही शिक्षण व्यवस्था, नियोजन तथा परिचालन का कार्य करता है। शिक्षक के समानार्थी शब्द– गुरू, उपाध्याय, आचार्य अध्यापक शब्द में ही अर्थ नीहित है।

शिक्षक की विशेषता

शि– शिष्टाचारी

क्ष– क्षमाशील

क – कर्तव्यशील

अध्यापक –

अ– अध्ययनशील

ध्या– ध्यानशील

पा– पाकभीरू

क– कर्तव्यशील होना चाहिए।

शिक्षक योग्यता –

वान के अनुसार– एप्टीटयूड सीखने की संभावना है जिस दर हित में परिणाम और और संतुष्टि अपेक्षाकृत विशिष्ट और संकीर्णता का एक उपाय है।

अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य–

1. शिक्षण योग्यता सामाजिक समायोजन और माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत (प्रवेशिका शिक्षकों) की कार्य संतुष्टि का अध्ययन।
2. पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों के माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता, सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर।
3. सरकारी, ग्रामीण व शहरी माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों कीसामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर।

4. निजी, ग्रामीण व शहरी माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर।
5. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर।
6. आवासीय और गैर आवासीय माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर।
7. हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर।
8. अधिक अनुभवी और कम अनुभवी माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता, सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर।
9. 40 वर्ष से अधिक/कम के माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता, सामाजिक समायोजन एवं कार्य संतुष्टि में अंतर।
10. प्रवेशिका स्तर एवं सामान्य माध्यमिक स्तर के संस्कृत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य अंतर।

Annexure -2

Review of work already done on the Subject of proposed research study.

संबंधित साहित्य की समीक्षा में अनुसंधान अध्ययन के निष्कर्ष उधोलिखित उद्धत हैं

1. शिक्षकों के शिक्षण योग्यता से संबंधित अध्ययन।
2. शिक्षकों की सामाजिक समायोजन से संबंधित अध्ययन।
3. शिक्षकों की कार्य संतुष्टि से संबंधित अध्ययन।

शिक्षण योग्यता –

शिक्षण योग्यता से संबंधित पूर्ववत अनुसंधान् संबंधित साहित्य का अध्ययन ।

रेड्डी, बूम एन (1991) ने पाया कि महिला उत्तरदाताओं ने अपेक्षाकृत शिक्षण योग्यता की परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन किया ।

रेड्डी, एस.आर. (2001) में अध्ययन किया कि पुरूषों -और महिलाओं के संभावित गणित के शिक्षकों को उनके शिक्षण योग्यता में कोई महत्वपूर्ण अन्तर बिना उच्च शिक्षण योग्यता रखने वाले थे ।

अगस्टीन जे (2010) शिक्षण योग्यता में पुरूषों और महिलाओं के छात्र शिक्षकों के मध्य महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया ।

प्रेम सुन्दर (2010) में अध्ययन किया कि सभी **B.Ed.** के छात्रों की शिक्षण के प्रति सकारात्मक योग्यता है वहाँ शिक्षण की दिशा में छात्र और छात्रा की योग्यता के बीच एक महत्वपूर्ण अन्तर है।

भसीन सी (1988) उनकी योग्यता और प्रभाव के संबंध में ग्रामीण और शहरी, सरकारी और गैर–सरकारी, पुरूष और महिला शिक्षकों के मध्य महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया।

पेरीयोसनी, सी (2001) शिक्षकों के लिए उनकी योग्यता में आहार से संबन्धित शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच कोई अन्तर नही पाया।

अगस्टीन जे (2010) शैक्षिक पृष्ठ भूमि में पुरूषों और महिलाओं शिक्षकों के मध्य महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया।

कई शोध पत्रिकाओं शैक्षिक अनुसंधान सर्वेक्षण और शैक्षिक स्तर के माध्यम से जानने के बाद यह पाया गया कि प्राथमिक स्तर के संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता के संबंध में अध्ययन किया गया।

सामाजिक समायोजन और शैक्षणिक योग्यता संबंधित अध्ययन

सामाजिक समायोजन से संबंधित अध्ययन निम्न अध्ययन पाए गए।

बालसुब्रमण्यम् लालकृष्ण और मीनाक्षी सुंदरम, ए (2003) पुरूष और महिला शिक्षकों के मध्य कार्य समायोजन में एक महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया है।

रेड्डी, एम वी (2004) में पाया गया कि दोनों पुरूषों और महिलाओं के शिक्षकों में सामाजिक समायोजन औसत था और वहाँ सामाजिक समायोजन के स्तर में कोई अन्तर नही था।

रेड्डी एम.वी. (2006) में पाया गया है कि शहरी और ग्रामीण स्कूलों में शिक्षकों की सामाजिक समायोजन का स्तर औसत श्रेणी में आता हैं। लेकिन दोनों उप नमूने औसत सामाजिक समायोजन के साथ थे।

गुप्ता, ए.के. (1981) में अध्ययन किया गया कि संयुक्त परिवारों से स्कूलों का अध्ययन किशोरों में काफी बेहतर है। शैक्षिक सामाजिक और भावनात्मक समायोजन प्रर्दशन का अध्ययन किया गया।

भास्कर राव डी राजशेखर, (2003) में पाया गया कि स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री के साथ भावी शिक्षकों का समायोजन एक औसत स्तर का था।

गुरविन्दर, लालकृष्ण (2007) में पाया गया हैं कि कालेज व्याख्याताओं के साथ ही स्कूल के शिक्षकों को अधिक वैवाहिक समायोजन समस्याओं का सामना करना पड़ा।

गुप्ता, बी.डी. (2011) में पाया गया समायोजन के साथ हि शिक्षकों की प्रभावशीलता एवं शिक्षकों के अनुभव से संबंधित था। उसके बाद यह गिरावट शुरू हुई वे (11–15) वर्षो के अनुभव के समूह में सबसे अधिक प्रभावी पाए गए।

सिंह (1981) में निष्कर्ष निकाला है कि उच्च प्रभावी शिक्षकों को बेहतर औसत और कम प्रभावी शिक्षकों से समायोजित किया गया।

कौर (1993) ''समायोजन के चर शिक्षक प्रभावशीलता का एक अच्छा कारक है।''

कार्य संतुष्टि संबंधित अध्ययन –

आन्जेयल (1968) शिक्षकों की उत्कृष्टता और विद्याथियों के गुण व्यवहार पर औसत के रूप में अपने छात्रों की एक बड़ी संख्या दर्ज की असन्तुष्ट शिक्षकों से संतुष्ट कर दिया। असन्तुष्ट शिक्षकों को अपने छात्रों के रूप में गरीब और औसत से भी नीचे छात्रों का मूल्यांकन किया गया।

शिव शंकर रेड्डी और राजशेखर (1992) स्थायी और अस्थायी नौकरी धारकों की नौकरी से संतुष्टि के स्तर में अन्तर पाया गया।

[illegible]
की नौकरी से संतुष्टि के साथ एक महत्वपूर्ण सकारात्मक तत्व है।

कक्कड़ (1983) व्यावसायिक दृष्टिकोण और नौकरी से संतुष्टि के बीच एक सकारात्मक संबंध की पहचान की।

गुरविन्दर, लालकृष्ण (2007) में पाया गया हैं कि कालेज व्याख्याताओं के साथ ही स्कूल के शिक्षकों को अधिक बैवाहिक समायोजन समस्याओं का सामना करना पड़ा।

गुप्ता, बी.डी. (2011) में पाया गया समायोजन के साथ हि शिक्षकों की प्रभावशीलता एवं शिक्षकों के अनुभव से संबंधित था। उसके बाद यह गिरावट शुरू हुई वे (11–15) वर्षो के अनुभव के समूह में सबसे अधिक प्रभावी पाए गए।

सिंह (1981) में निष्कर्ष निकाला है कि उच्च प्रभावी शिक्षकों को बेहतर औसत और कम प्रभावी शिक्षकों से समायोजित किया गया।

कौर (1993) "समायोजन के चर शिक्षक प्रभावशीलता का एक अच्छा कारक है।"

कार्य संतुष्टि संबंधित अध्ययन –

आन्जेयल (1968) शिक्षकों की उत्कृष्टता और विद्यार्थियों के गुण व्यवहार पर औसत के रूप में अपने छात्रों की एक बड़ी संख्या दर्ज की असन्तुष्ट शिक्षकों से संतुष्ट कर दिया। असन्तुष्ट शिक्षकों को अपने छात्रों के रूप में गरीब और औसत से भी नीचे छात्रों का मूल्यांकन किया गया।

शिव शंकर रेड्डी और राजशेखर (1992) स्थायी और अस्थायी नौकरी धारकों की नौकरी से संतुष्टि के स्तर में अन्तर पाया गया।

नायक के.डी. (1992) में पाया गया कि अध्ययन अध्यापन में महिला शिक्षकों की नौकरी से संतुष्टि के साथ एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध है।

कक्कड़ (1983) व्यावसायिक दृष्टिकोण और नौकरी से संतुष्टि के बीच एक सकारात्मक संबंध की पहचान की।

सोम (1984) ने कहा कि महिला शिक्षकों की शिक्षण एवं अध्यापन पेशे और विद्यार्थियों के प्रति दृष्टिकोण में पुरूषों की तुलना में अधिक हो जाती है।

जैस्मीन मारिया सिलवेस्टर (2010) अध्यापन के पेशे के प्रति रवैया के संबंध में पुरूष और महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के मध्य महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया । लिग भेदभाव का अध्यापन के पेशे के प्रति रवैये पर प्रभाव नही था।

चैन (1977) सुलिवान (1981) सिनात्रा (1982), गुप्ता (1983), सिद्दिकी (1999) और खान (2000) में पाया कि अनुभव के शिक्षकों को प्रभावित नही किया । उनके कार्य में संतुष्टि हैं।

लुईस (1982) ने अध्ययन में पाया है कि वह शिक्षक जो वर्तमान स्कूल में निरन्तर अनुभव था दूसरों की तुलना में अधिक सन्तुष्ट थे।

सलाह (1998) नौकरी से सन्तुष्टि और अनुभव के बीच कोई संबंध नही मिल रहा था।

ठक्कर एम. जे (1996) अध्ययन में पाया गया कि माध्यमिकं विद्यालय 9–16 साल के अनुभव वाले प्रधानाचार्य और अधिक संतुष्ट थे और 0–8 साल के अनुभव वाल कम सन्तुष्ट थे।

भुईया बी और चौधरी एम (2000) नौकरी से संतुष्टि के स्तर के अर्न्तगत कॉलेज शिक्षकों के अनुभवों के बीच कोई संबंध नही पाया ।

श्री निवासन (2007) ने अध्ययन में कहा कि कम अनुभव शिक्षकों को उच्च अनुभव शिक्षकों से भी कम नौकरी से संतुष्टि हैं।

जैस्मीन मारिया सिलवेस्टर (2010) ने अध्ययन में यह पाया कि नौकरी से संतुष्टि के संबध में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित शिक्षक प्रशिक्षकों के मध्य महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया।

शर्मा बी. के. और सबिता, पी.पी.(2009) में पाया गया – निजी स्कूलों के शिक्षक अत्यधिक संन्तुष्ट थे जबकि सरकारी स्कूलों के शिक्षक केवल नौकरी से संतुष्टि में औसत से उपर थे। स्कूलों और शिक्षकों की नौकरी से संतुष्टि के संगठनात्मक स्वास्थ्य के रिश्ते से संबंधित परिणाम् उन दोनों के मध्य एक सकारात्मक और पर्याप्त सह–संबन्ध का संकेत दिया।

एक व्यक्ति की आयु जो नौकरी से संतुष्टि के संगठनात्मक स्वास्थ्य के रिश्त से संबंधित वहां एक व्यापक प्रसार धारणा है कि उत्पादकता के साथ उम्र में गिरावट आती है।

केंटले (1985) में यह भी पाया है कि उम्र काफी नौकरी से संतुष्टि से संबंधित था।

रिचर्ड और डेवहिरस्ट (1979) में खुलासा किया कि उम्र के बाहय संतोष के साथ एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध का प्रदर्शन किया और उम्र व आन्तरिक संतुष्टि के बीच ऐसा कोई संबंध नही था।

गॉढ किन (1982) उत्तरदाताओं की उम्र और उनके कार्य पर उम्मीद की संतुष्टि के स्तर के बीच एक सकारात्मक संबध पाया गया।

भाकर राव और श्रीधर (2003) उम्र और नौकरी से संतुष्टि के मध्य एक सकारात्मक संबंध पाया गया।

श्री निवासन् (2007) में पाया कि सभी शिक्षक लिंग की परवाह किए बगैर, अपनी नौकरी से संतुष्ट थे।

ट्रिपर (1954) ने कहा कि व्यावसायिक स्थिति, नौकरी से संतुष्टि में मतभेद पैदा करने में सबसे महत्वपूर्ण कारक है।

पोर्टर (1962) में कहा गया कि रोजगार के उच्च स्तर और अधिक अहंकार की संतुष्टि अधिक स्थिति भुगतान करते हैं और आत्म दिशा प्रदान करते हैं।

रोहिला (1966) ने अपने अध्ययन में पाया कि भौतिक वातावरण से भी कार्य में असंतोष हो सकता है।

श्री वास्तव, एम (1986) में पाया गया कि पुस्तकालय, वाचनालय स्टाफ रूम की सुविधा के लिए पर्याप्त शैक्षिक माहौल को बढावा देने के लिए नहीं थे। शिक्षक प्रशिक्षक असन्तुष्ट थे।

शंकर, बी.(1987) शिक्षकों की जिम्मेदारी और माध्यमिक स्कूल स्तर पर स्कूल जलवायु और शिक्षकों की नौकरी से संतुष्टि के साथ अपने संबंधों का अध्ययन किया।

लोके और व्हिटिंग (1974) में पाया गया कि कंपनी या संगठन के प्रचार और मान्यता पर जोर देने के साथ दोनों संतोषजनक और असंतोषजनक घटनाओं के सर्वोच्च प्रतिशत के कारण के रूप में देखा गया था।

बिजमेन (1970) ने अध्ययन में पाया कि आन्तरिक "उत्तेजनाओं के साथ मूल्यांकन किया जा सकता है"।

Annexure-3

Research gaps identified in the proposed field of investigation.

शिक्षण एक यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है लेकिन यह एक जटिल मांग और चुनौतीपूर्ण काम है। आधुनिक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया पर जोर देती है।

1. माध्यमिक विद्यालयों के संस्कृत शिक्षकों को पूर्ण मान–सम्मान न मिलना।
2. संस्कृत भाषा को मृत भाषा के रूप में मानना।
3. लोगों कि यह धारणा है संस्कृत भाषा पण्डितों की ही भाषा है।
4. त्रिभाषा सूत्र में संस्कृत भाषा वैकल्पिक है। इस कारण से संस्कृत शिक्षकों में हेय भावना आ जाती है।
5. पूर्ण रूप्र से अध्यापन के पेशे में वर्तमान में व्यापक अंसतोष की उपरिथति है।

अध्ययन का कार्य क्षेत्र

माध्यमिक विद्यालयों में संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता, सामाजिक समायोजन एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन" (राजस्थान राज्य के विशेष संदर्भ में) का कोई पूववर्ती अध्ययन नहीं पाया गया एवं इस पर शोध निर्देशक से चर्चा कर यह विषय लिया गया।

1. माध्यमिक विद्यालय प्रवेशिका स्तर के शिक्षक।
2. ग्रामीण माध्यमिक प्रवेशिका, विद्यालय के संस्कृत शिक्षक।
3. निजी / सरकारी माध्यमिक (प्रवेशिका / विद्यालय के संस्कृत शिक्षक)
4. गैर आवासीय माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षक।
5. अनुभवी एवं अधिक अनुभवी संस्कृत शिक्षक।
6. आंगल माध्यम के माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षक।
7. सामान्य शिक्षा एवं संस्कृत शिक्षा के माध्यमिक स्तर के अध्यापक।
8. 40 वर्ष से उपर व 40 वर्ष से कम उम्र के संस्कृत शिक्षक।

परिसीमांकन

- वर्तमान अध्ययन राजस्थान राज्य के प्रवेशिका स्तर शेखावाटी क्षेत्र के सामान्य संस्कृत शिक्षकों तक ही सीमित है।
- आवासीय और गैर आवासीय माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य अन्तर, अंग्रेजी भाषा माध्यम और हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों तक ही सीमित रखा गया है।
- अधिक अनुभव और कम अनुभवी माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षक एवं 40 वर्ष से कम/अधिक आयु वर्ग के माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों को ही लिया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ

वर्तमान अध्ययन के प्रमुख शैक्षिक निहितार्थ बहुत कम पाये गये। राजस्थान राज्य विशेषतः शेखावटी क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों के मध्य शिक्षण योग्यता सामाजिक समायोजन एवं कार्य संतुष्टि का विकास करना होगा ताकि शिक्षा का स्तर उच्च हो सके।

Annexure-4

Major hypothesis :

परिकल्पना

परिकल्पना शब्द का शाब्दिक अर्थ पूर्व चिन्तन है। परिकल्पना के अभाव में वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव नहीं है। परिकल्पना की अनुपस्थिति में वैज्ञानिक अध्ययन उद्देश्यहीन हो जाता है।

गुड और हैट के अनुसार – परिकल्पना यह बताती है कि हमें क्या खोज करनी है। परिकल्पना भविष्य की और देखती है। यह एक तर्क पूर्ण वाक्य होता है जिसकी वैधता की परीक्षा की जा सकती है। यह सत्य भी सिद्ध हो सकती है और असत्य भी सिद्ध हो सकती है।

निम्नलिखित परिकल्पनाएं वर्तमान अध्ययन के लिए –

1. शिक्षण योग्यता सामाजिक समायोजन और माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत (प्रवेशिका शिक्षकों) की कार्य संतुष्टि का अध्ययन की तुलना करना।
2. पुरूषों एवं महिलाओं के माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता, सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर का अध्ययन करना।
3. सरकारी, ग्रामीण व शहरी माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर का तुलनात्मक अध्ययन।
4. निजी, ग्रामीण व शहरी माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर की तुलना करना।
5. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर की तुलना करना।
6. आवासीय और गैर आवासीय माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर की तुलना करना।

7. हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर की तुलना करना।

8. अधिक अनुभवी और कम अनुभवी माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता, सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि में अंतर की तुलना करना।

9. 40 वर्ष से अधिक/कम के माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता, सामाजिक समायोजन एवं कार्य संतुष्टि में अंतर की तुलना करना।

10. प्रवेशिका स्तर एवं सामान्य माध्यमिक स्तर के संस्कृत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य अंतर की तुलना करना।

Annexure- 5

Material and methods/research methodology.:

अनुसंधान विधियां

अनुसंधान एक औपचारिक प्रक्रिया माना जाता है। विश्लेषण करने के बाद व्यवस्थित और गहन प्रक्रिया है।''

अनुसन्धान चिन्तन की एक ऐसी क्रमबद्ध तथा विशुद्ध प्रविधि है जिसमें विशिष्ट यन्त्रों उपकरणों तथा प्रक्रियाओं का उपयोग इस उद्देश्य से किया जाता है ताकि एक समस्या का अधक समुचित समान उपलब्ध हो सके – **कोफोर्ड (1958)**

उपुयक्त विधि का चयन

इस समस्या के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया जो कि वर्तमान अध्ययन की प्रकृति पर निर्भर करता है। सर्वेक्षण विधि शिक्षण योग्यता सामाजिक समायोजन और शेखावाटी क्षेत्र माध्यमिक प्रवेशिका विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि अध्ययन करने के लिए चुना गया है।

एक समुदाय का सर्वेक्षण सामाजिक विकास की एक रचनात्मक परियोजना प्रस्तुत करने के उद्देश्य से किया गया उस समुदाय की दशाओं, आवश्यकताओं का वैज्ञानिक अध्ययन है।– **बर्जेस (1918)**

वर्तमान अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का इस्तेमाल किया जा सकता है। सटीक जानकारी प्राप्त हो सके। महत्वपूर्ण समस्याओं के समाधान में सहायक विधि है।

महत्वपूर्ण पदों की परिभाषाएं

शिक्षण – शिक्षण एक सामाजिक और व्यावसायिक गतिविधि है। यह विकास की एक प्रक्रिया है। जो अन्तर व्यैक्तिक सम्बन्धों के माध्यम से सीखने प्रेरित करने की एक प्रणाली है। शिक्षण एक उददेश्यपूर्ण गतिविधि है। शिक्षण का चरम लक्ष्य बच्चे का सर्वांगीण विकास है।

शिक्षण योग्यता – शिक्षण शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद प्रवीणता हासिल करने की क्षमता है। शिक्षक औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर आगे बढ़ता है उत्कृष्टता की और जाता है। और शिरमोर्य होता है।

मालविकाग्निमित्रम् (1–25) कालिदास

सामाजिक समायोजन — समायोजन व्यक्ति और वातावरण के मध्य सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों का एक संकेत ह। प्रकृति के अनुसार अपने को ढ़ालना समायोजन है। समायोजन एक सतत् प्रक्रिया है। सामाजिक समायोजन में सामाजिक गतिविधियों और सद्गुणों की आवश्यकता होती है।

कार्य संतुष्टि — नौकरी से संतुष्टि एक व्यक्ति के ही कार्य करने के लिए भावानात्मक प्रतिक्रिया है यह कार्य की दिशा में एक व्यक्ति का रवैया है।

माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षक

सामान्य विद्यालय संस्कृत शिक्षक प्रवेशिका विद्यालय संस्कृत शिक्षकों का चयन किया है।

निजी और माध्यमिक विद्यालय– निजी प्रबंधन द्वारा संचालित सार्वजनिक स्कूल सरकारी मान्यता प्राप्त है। गैर आवासीय माध्यमिक विद्यालयों को भी सम्मलित किया गया।

आयु– माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की वास्तविक या कालानुक्रमिक उम्र को ध्यान में रखकर दो आयु समूहों में वर्गीकृत किया गया है।

(1) 40 साल से कम (2) 40 साल से अधिक

अनुभव — अनुभव को दो वर्गों में विभाजित किया है।

(1) अधिक अनुभवी – 15 वर्ष से उपर (2) कम अनुभवी 15 वर्ष से कम।

अध्ययन के चर

वैज्ञानिक अनुसन्धान की अध्ययन रूपरेखा या अध्ययन विधि निर्धारित करने में चरों का बहुत महत्व है। चरों के ज्ञान चरों के मापन और चरों के नियन्त्रण के अभाव

में वैज्ञानिक अध्ययन करना सम्भव नहीं है। अनुसन्धान समस्या के सम्बन्ध में परिकल्पनाओं के निर्माण के बाद अध्ययन की योजना बनाई जाती है।

चर को परिवर्त्य परिवर्ती और चल राशि भी कहते है। इनमें चर शब्द कहना सरल नहीं है बल्कि इसी शब्द का उपयोग सर्वाधिक हैं चर का शाब्दिक अर्थ है। बदलना/परिवर्तित होना। चर की मात्रा में परिवर्तन होना चर का एक आवश्यक गुण है।

वर्तमान अध्ययन चर :

1. **लिंग** – माध्यमिक विद्यालय/ प्रवेशिका विद्यालय के पुरूष संस्कृत शिक्षक एवम् माध्यमिक विद्यालय के महिला संस्कृत शिक्षिकाएं।
2. **आधुनिक** : सामान्य शिक्षक एवं प्रवेशिका संस्कृत शिक्षक।
3. **स्थानीय़ता–** ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षक।
4. **प्रबन्धन** : निजी/ सरकारी माध्यमिक विद्यालयों संस्कृत शिक्षक।
5. **निवास** – गैर आवासीय एवं आवासीय माध्यमिक विद्यालयों के संस्कृत अध्यापक।
6. **माध्यम–** आंगल /हिन्दी भाषा माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के संस्कृत शिक्षक।
7. **आयुः** 40 साल से कम उम्र आयु के 40 वर्ष से अधिक आयु के संस्कृत अध्यापक।
8. **अनुभव** – कम अनुभवी संस्कृत शिक्षक एवम् अधिक अनुभवी संस्कृत अध्यापक।

1. **लिंग** – महिलाओं की शिक्षा का बहुत महत्व है। अभिभावक भी उन्हें प्रोत्साहित कर रहे है। उच्च शिक्षा की और अग्रसर कर रहे है। महिलाओं के लिए अध्यापन पेशा बहुत उपयुक्त है। शिक्षण योग्यता में अंतर हो सकता है। पुरूषों और महिलाओं के माध्यमिक विद्यालयमें संस्कृत शिक्षकों के मध्य अन्तर

है। शिक्षण योग्यता, सामाजिक समायोजन और संस्कृत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि हो सकेगी।

2. **स्थानीयता** – ग्रामीण और शहरी विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों को किस तरह का माहौल एवं कार्य सामाजिक समस्याओं, शैक्षिक संस्कृति, पुनरच पाठ्यचर्या में किस प्रकार भेद है। आपस में तौलनीकरण होगा।
3. **प्रबंधन** – सरकारी विद्यालय में अध्यापक सेवा शर्तो की नियुक्ति के संरक्षण, सेवानिवृति लाभ, प्रशासन सेवा, पर्यवेक्षण आदि का भुगतान सरकार करती है। निजी विद्यालय के अध्यापक प्रबंधन के रवैये पर निर्भर होते है। इससे शिक्षण योग्यता पर काफी प्रभाव पड़ेगा शिक्षकों के मध्य तुलनात्मक भेद है।
4. **आवासीय विद्यालय और गैर आवासीय**– आवासीय विद्यालय और गैर आवासीय विद्यालय रहन–सहन कार्य भागीदारी, पाठयेतर क्रियाए सम्मलित रहती है। आवासीय विद्यालय में शिक्षकों को अत्यधिक कार्य करना होता है। यह चर तुलना के लिए उपयुक्त माना है।
5. **शिक्षा का माध्यम** – माध्यम भी एक चर माना जा सकता है यह शिक्षण का माध्यम है। सीखने के लिए निश्चित भूमिका है। शिक्षण योग्यता, सामाजिक समायोजन एवं कार्य सन्तुष्टि में वैध भूमिका निभानी होगी।

माध्यमिक विद्यालय के संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता पूरी तरह शामिल है।

टीचिंग एप्टीटयूड टेस्ट बैटरी जो तैयार **(TATB)** किया है। **शमीम करीम, अशोक कुमार दीक्षित** द्वारा मानकीकृत किया गया था शेखावाटी व राजस्थान राज्य के प्रवेशिका स्तर संस्कृत शिक्षकों माध्यमिक विद्यालयों में काम कर रहे शिक्षकों की शिक्षण योग्यता का अध्ययन करने के लिए चयन किया।

दत्तांश संकलनम– प्रश्नावली पत्र निर्माण द्वारा निरीक्षण इत्यादि उपकरणों के माध्यम से तुलनात्मक दंताश का संग्रहण करना।

दत्तांश विश्लेषण – संकलित दतांशो का यथा विधि वर्णन।

शिक्षण अनुभव – अनुभव शिक्षक को समृद्ध करता है। अधिक अनुभवी एवं कम अनुभवी शिक्षकों के मध्य तुलना भी महत्वपूर्ण अन्तर है। शिक्षण योग्यता सामाजिक समायोजन और कार्य संतुष्टि के लिए उपयुक्त चर है।

उम्र – व्यक्ति के व्यवहार, परिपक्वता, सोचने का तर्क के स्तर को प्रभावित करती है। स्थितियों, व्यवहार और अभिरूचि को समझने में 40 वर्ष से उपर उम्र आयु वर्ग एवम् 40 वर्ष से निम्न आयु वर्ग के मध्य अन्तर मौजूद है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रस्तुत शोध कार्य में एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा–

1 मध्यमान

2 प्रमाप विचलन

3 टी मान

4 सह संबंध

न्यादर्श

1. राजस्थान राज्य का शेखावाटी क्षेत्र न्यादर्श में स्वीकृत किया। जिसमें तीन जिले आते है– सीकर, झुन्झुनू और चूरू।
2. राजस्थान राज्य के प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय प्रस्तुत शोध में दत्त संकलन हेतु लिया जायेगा।

उपकरण

1. प्रश्नावली
2. सर्वेक्षण विधि ।
3. स्तरीकृत नमूना विधि
4. सांख्यकी विधि
5. शिक्षण योग्यता की माप (TATB) (मानकीकृत उपकरण)

अध्यायीकरण –

अध्याय– प्रथम

1.0 परिचय

1.1 समस्या कथन

1.2 अध्ययन की आवश्यकता

1.3 अध्ययन का कार्यक्षेत्र

1.4 अध्ययन के उद्देश्य

1.5 शैक्षिक प्रभाव

अध्याय– द्वितीय – संम्बन्धित पूर्वगामी साहित्य का अध्ययन

अध्याय– तृतीय – अनुसंन्धान विधियां एवं कार्य पद्धति।

3.0 अनुसंधान कार्य प्रणाली

3.1 महत्वपूर्ण पदों के परिचालन की परिभाषा

3.2 अध्ययन के चर

3.3 प्राक्ककल्पना का अध्ययन।

3.4 न्यादर्शों का अध्ययन।

3.5 उपकरणों का अध्ययन।

अध्याय – चतुर्थ – आकड़ों की गणना एवं विश्लेषण –

4.1 शिक्षण योग्यता।

4.2 सामाजिक समयोजन

4.3 कार्य सन्तुष्टि।

4.4 शिक्षण योग्यता, सामाजिक समायोजन एवं कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्याय– पंचम – सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव।

5.1 सारांशीकरण ।

5.2

5.3 सुझाव।

5.4 भाव्य अनुसंधान सूची।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट भाग

Appendix - A –

1. व्यक्तिगत दतांश सीट
2. शिक्षण योग्यता परीक्षण बैटरी
3. सामाजिक समायोजन स्केल
4. शिक्षक कार्य सन्तुष्टि प्रश्नावली
5. सामान्य विद्यालयों की सूची
6. संस्कृत प्रवेशिका विद्यालयों की सूची

Annexure - 6

9. Bibliography <u>सन्दर्भ ग्रन्थ सूची</u>

(A) हिन्दी सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1.	अरोड़ा, रीता (2005)	:	''शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार'' शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या. **326–327**
2.	कपिल, एच के. (1979)	:	''अनुसंधान विधियाँ'' द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भार्गव हाऊस आगरा, पृष्ठ संख्या–**23**
3.	कोठारी, सी.आर. (2008)	:	''अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी'' न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या–**2**
4.	जायसवाल, सीताराम (**1994**)	:	'शिक्षा मनोविज्ञान' आर्य बुक डिपो मंदिर करोल बाग नई दिल्ली पेज **221**
5.	ढोढियाल, एस. पाठक (1990)	:	''शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर पृष्ठ संख्या–**51**
6.	पाठक,पी.डी. (2007)	:	''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, पृ.सं. **245, 552,450**
7.	भटनागर, आर.पी. (1973)	:	''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'' द्वितीय संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृष्ठ संख्या–**107**
8.	भटनागर, सुरेश, (**1996**)	:	''शैक्षिक प्रबन्ध और शिक्षा की समस्याएं'', सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, पृ. स. **440.**
9.	भटनागर, सुरेश (**2009**)	:	''शिक्षा मनोविज्ञान'' लायल बुक डिपो मेरठ पृष्ठ संख्या–**153**

10.	भार्गव, ऊषा (1993)	:	''किशोर मनोविज्ञान'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर पृष्ठ संख्या-99
11.	भार्गव, महेश (2007)	:	'आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण+मापन' एच.पी. भार्गव बुक हाउस आगरा पेज- 463-64,526
12.	मित्तल, एम. एन. (2005)	:	''शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार'', इन्टरनेशल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, पृ. स.- 293-296
13.	मेहता, वी.आर (2006)	:	''उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा'' बी.ई. प्रथम कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा पृष्ठ संख्या-71
14.	मेहता, वी.आर. (2006)	:	''अध्ययन पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति'' मूल्यपरक शिक्षा, कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा, पृष्ठ संख्या-70
15.	मोहन्ती जगन्नाथ (2006)	:	''अध्यापक, शिक्षा'' दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-229
16.	राय, पी.एन.(1981)	:	''अनुसंधान परिचय'' चतुर्थ संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृष्ठ संख्या-63
17.	शर्मा, आर.एस. (2004)	:	''शिक्षा अनुसंधान'', आर.लाल बुक डिपो मेरठ पे. 145-213
18.	शर्मा, वन्दना एवं राजकुमारी (2006)	:	''शिक्षा मनोविज्ञान एवं मापन'' राधा प्रकाशन आगरा पृष्ठ संख्या-92
19.	श्री वास्तव, डी.एन. और वर्मा प्रीति (2004)	:	''शिक्षा अनुसंधान में सांख्यिकी विधियाँ'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
20.	सुखिया, एस.पी. (1973)	:	''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'' द्वितीय संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृष्ठ संख्या-487

21.	हकीम, एम.ए. और अस्थाना विपिन (1994)	:	''मनोविज्ञान की शोध विधियाँ'' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृष्ठ संख्या–169
22.	सिंह, शक्रद, (2005)	:	''तननीकी एवं गैर–तकनीकी महाविद्यालयों में ज्ञान प्रबन्धित तंत्र की आवश्यकता'' पृष्ठ संख्या–16
23.	सिंह, मयाशंकर (2006)	:	''शिक्षण तकनीक एवं शिक्षा के नूतन आयाम, अध्ययन'' पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृष्ठ संख्या–80,188
24.	त्रिवेदी एवं शुक्ला (2008)	:	'रिसर्च मैथ्डोलॉजी' कॉलेज बुक डिपो जयपुर पेज 321

(B) शब्द कोश और एनसाईक्लोपीडिया की सूची :

1.	नालन्दा शब्द कोश (1991)	:	आदर्श बुक डिपो, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–627
2.	फादर कामिल बुल्के (2004)	:	''अंग्रेजी हिन्दी शब्द कोश'' एस.चन्द एण्ड कम्पनी नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–232
3.	वर्मा और शाही (2009)	:	''ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश'' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–381
4.	शैली, वेहक्यर (2006)	:	''ऑक्सफोर्ड एडवांस लर्नर डिक्सनरी'' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–499,552,991
5.	सहाय, राजवल्लभ एवं. श्रीवास्तव, मुकन्दीलाल (2009)	:	''वृहद् हिन्दी शब्द कोश'' ज्ञान मण्डल लि. बनारस पृष्ठ संख्या–713

(C) हिन्दी शोध पत्र-पत्रिकाओं की सूची :-

1. 'अनुसंधान एवं अध्ययन' शिक्षा विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय अंक 54 (2003)
2. 'भारतीय आधुनिक शिक्षा', NCERT, नई दिल्ली, अंक-3, वर्ष-22, जनवरी 20, पृ. सं. 55–66
3. ''ज्ञान एक अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक पत्रिका'' प्रबन्धन उच्च संस्थान (AIM) गाजियाबाद, अंक 2 नं. 2 जनवरी-जून 2006
4. ''राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान सम्प्राप्तियां सम्भावनाएं,'' शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर, अंक प्रथम 1996
5. ''संचालिका'' शैक्षिक पत्रिका अक्टूबर-दिसम्बर. 2008 पृ.स. 27–29
6. जैक्सिन, सू ''जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड डवलपमेन्ट इन एज्युकेशन'' यू ऑफ सी.लास एंजिल्स, Vol.. 29 नवम्बर, .(2007): पृ.सं. 131
7. ''शिक्षा चिंतन'', शैक्षिक त्रैमासिक शोध पत्रिका, त्रिमूर्ति संस्थान, कानपुर (अप्रैल-जून), (2009), सोनकर अंजना- पृष्ठ–36

(G) List of Websites:-

1. http:/iej.com.ac
2. www.caresults.nic.in
3. www.google.co.in

30-05-2016

Signature of the Candidate with date

Outline Approved

Name and Signature of Supervisor with date & Seal:

Dr. ... Singh
Head Dept. of Education
Regional Institute of Education
अजमेर (राज०)/ Ajmer (Raj.)